हैं हैं। श्री विशिष्क हो | 92-85|33968.—चूंकि हरियोणा के राज्यपाल की राय है कि मैं, सुप्रीम इन्जिनियरिंग इन्ढस्ट्रीज प्रा.लि. (पिंड के हिविजित) हैं, इन्डस्ट्रीयल इस्टेट, सैक्टर-6, फरीशबाद के श्रमिक श्री नारायण सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें हिसक बार्व सिक्किस मामुल्यूम कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

करें रे कीर विकि हिरियाण के राज्यपाल थिवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई प्रानितयों की प्रयोग करते हुए, इिर्याणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 के जून, 1968 के सीट पहेते हुए अधिसूचना सं 11495-जिम्श्रम -57/11245, दिनांक 7फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की जिवादग्रस्त या उससे सुसंगत, या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला के या कि पहेते होते मास में देने हेत् निर्दिश्य करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद संस्ति स्वाप्त अध्या संबंधित मामला है :---

🛝 🛴 वैया 🗐 मारायण े सिंह की सेवाध्रों का समापन स्थाय चित तथा ठीक है, यदि नहीं, तो वह विस राहत का हकदार है ?

के राज्यपाल की राय है कि मैं इन्डस्ट्रीयल फाउन्डर्स एण्ड इन्जी निर्मात की प्राप्त के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलेक में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

भीर चुकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसे तिए में जो भी शोगिक विवाद प्रशिनियम; 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुँगे हिरियाण[: के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं. 5415-3-श्रम 68/15254 दिनांक 20 जून, 1968 के स्थिति है है प्रशिन्ध के स्थाद की श्रम का प्राप्त कर प्रशिक्ष के स्थाद की कि बाद प्रत्ते के स्थाद की कि सम्बद्धित नी के लिखा की धारी के के स्थान के स्थान के दिन श्रम का यायालय, परीदाबाद को विवाद प्रस्तु मा उससे सुक्त या उससे सम्बद्धित नी के लिखा की मामला स्थान के प्रयोग की विवाद समास में देने हेत निर्दिष्ट वरते हैं, जो कि उससे प्रवेश के तथा श्रम के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है, यो विवाद से मुस्तित प्रयोग सम्बद्धित मामला है;

हैं वया औं मिजूरत अली की सेवाओं का समापन त्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो यह किस राहत का हकदार है?

रियोणा के राज्यपाल की राय है कि में. इन्डस्ट्रीयल फाउन्डर्स ए॰ ड इन्डिनियसे (१०/४) मेथुरी शोड, फरीदाबाद के श्रीमक श्री मुन्ता लाल तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मानले मे कोई ॰ श्रीदोगिक विवाद है।

मीर चूँकि हैरियाणा के राज्यपाल विवाद को ध्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

बया श्री मुन्ना लाल की सेवाओं का समापन त्यायोचित तथा ठीक है यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

कि में भी लि/ऐफंडी/2-85/33989.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. बोलटन प्रा० लि. 14/3, कि मैं प्रीतिबिद्ध के प्रीतिबद्ध के श्रीमक श्री विरंस तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक

भीर विक्रिं हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

क्षेत्र क्षिति क्षित क्षेत्र क्षेत्र विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्त क्षित्र प्रदेश हिए हिरयाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिस्चना सं 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जन, भी कि के के स्वार्थ पढ़ते हुए ग्रधिस्चना सं 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिस्चना की धारा है कि स्वार्थ पढ़ते हुए ग्रधिस्चना सं 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिस्चना की धारा है कि स्वार्थ के सम्बन्धित नीचे लिखा मामला त्यायनिर्णय एवं पचिट तिन सास पदिन है निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथंचा संबंधित मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथंचा संबंधित मामला है —

ें क्या श्री विरेस की सेवाओं का समापन त्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार **है ?**